पीएच० डी० शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध प्रबन्ध का विषय

सूर्यबाला के कथा साहित्य में मध्यवर्ग

शोध निर्देषक

प्रोफेसर श्रीराम शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
तथा
पूर्व अधिष्ठाता भाषा संकाय
हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय
समरहिल, षिमला–171005

शोधकर्त्री

राज भगती
हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय
समरहिल, षिमला–171005

हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय
समरहिल, षिमला–171005

साहित्य मानवीय अनुभूतियों एवं सामाजिक गतिविधियों का प्रतिबिम्ब है। समाज तथा जीवन में जो कुछ भी घटित होता है, उसी सामाजिक एवं जीवन यथार्थ अभिव्यक्ति को साहित्य की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। साहित्य युग और बौद्धिक चेतना का वाहक होता है। इसका लक्ष्य मानव कल्याण और जीवनोपयोगी मूल्यों की स्थापना करना है। हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल साहित्य विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस काल से पहले साहित्य रचना मात्र पद्य रूप में होती थी, लेकिन उन्नीसवीं शताब्दी में आए साहित्यिक परिवर्तनों के कारण साहित्य जगत में गद्य विधा का भी विकास हुआ। इस विधा के अन्तर्गत उपन्यास, कहानी, नाटक, रेखाचित्र, संस्मरण आदि उभर कर सामने आए हैं। व्यक्ति के विचारों की अभिव्यक्ति जीवन और जगत की वास्तविकता जितनी कथा साहित्य में चित्रित की जा सकती है, उतनी साहित्य की अन्य किसी भी विधा में नहीं। कथा साहित्य सर्वाधिक गतिषील विधा है। यह जीवन और समाज का पर्याय है। कथा साहित्य के अन्तर्गत कहानी और उपन्यास को सम्मिलित किया जाता है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पष्चात् भारतीय समाज में सामाजिक व्यवस्था को नया सन्दर्भ और परिदृष्य मिला। नयी उमंग और भावना ने जन्म लिया। मानव समाज की कल्पना के साथ ही वर्गों का स्वरूप स्वतः जागृत हो जाता है। समाज में मध्यवर्ग का अँस्तित्व किसी न किसी रूप में अवष्य विद्यमान रहता है। मध्यवर्ग समाज का ऐसा समूह है, जो न तो बहुत अधिक धनी होता है, और न ही बहुत गरीब। यह वर्ग सामाजिक आदर्षों एवं लक्ष्यों से अपने आपको बांधकर रखता है। चूंकि इस वर्ग का सम्बन्ध समाज के उच्चवर्ग एवं निम्नवर्ग दोनों से रहता है। यही कारण है कि काल और सीमा के अनुरूप मध्यवर्ग का रूप परिवर्तित होता रहता है और कथाकारों ने अपनी रचनाओं में इसे अभिव्यक्त किया है।

साठोत्तरी हिन्दी कथा साहित्य में महिला साहित्यकारों ने अपना विषिष्ट स्थान निर्माण किया है। इन कथाकारों में सूर्यबाला का अपना विषेष महत्व है। सूर्यबाला के समग्र साहित्य के केन्द्र में मध्यवर्ग ही रहा है, क्योंकि सूर्यबाला स्वयं मध्यवर्गीय परिवार से आयी है। इसलिए समस्याओं का सामना करना तथा अपने

लक्ष्यपूर्ति के लिए जूझना उसकी प्रकृति में है। सूर्यबाला ने अपने कथा साहित्य में मध्यवर्गीय समाज में व्याप्त सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक विसंगतियों को उजागर किया है।

भारतीय समाज के विकास में मध्यवर्ग का योगदान महत्वपूर्ण है। विभिन्न तरह के आन्दोलनों से लेकर परिवर्तनों में यह वर्ग सम्मिलित रहा। इसनें सभी आन्दोलनों में जनहित के साथ अपने स्वार्थ को ही रखा। यही कारण है कि हिन्दी कथा साहित्य के कथाकारों ने मध्यवर्गीय समाज के व्यक्ति को केन्द्र में लाकर नयी पहल की। इन कथाकारों ने मध्यवर्ग के जीवन में व्याप्त विसंगतियों, विवषताओं एवं अन्तर्विरोधों को भी अधिक प्रामाणिक ढंग से प्रस्तुत किया है। अतः यह कहा जा सकता है कि मध्यवर्गीय कथाकारों ने कई नए आयाम हिन्दी कथा साहित्य को प्रदान किए हैं।

विषय चयन

सूर्यबाला के कथा साहित्य के प्रति मेरी गहन रूचि रही है। उनकी कहानियां पढ़ने के पष्चात् मैंने जाना कि उनका साहित्य जीवन के अत्याधिक समीप है। उन्होंने अपने साहित्य में मध्यवर्ग की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक पक्षों को यथार्थ भूमि पर चित्रित किया है। अपने अध्ययन के दौरान मैंने पाया कि प्रस्तुत विषय पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। यही कारण है कि मैंने शोध कार्य के लिए 'सूर्यबाला के कथा साहित्य में मध्यवर्ग' विषय का चयन किया। सूर्यबाला के कथा साहित्य को समीक्षा की अलग–अलग दृष्टियों से मूल्यांकित किया गया है। जहां तक मेरी जानकारी है, इस विषय पर अभी तक कोई भी शोध कार्य नहीं है। इस कारण प्रस्तुत विषय का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। सूर्यबाला के कथा साहित्य में 'मध्यवर्ग' अपने आप में बहुत व्यापक विषय है। शोध की दृष्टि से प्रस्तुत विषय मौलिक एवं नवीन है।

विषय का महत्त्व एवं स्पष्टीकरण

आधुनिक कथा साहित्य में नवीन चेतना एवं यथार्थ का संचार करने वाले उत्कृष्ट कोटि के कथाकारों में सूर्यबाला का स्थान सर्वोपरि है। सूर्यबाला के कथा

साहित्य में मानव जीवन की समस्त घटनाओं को उनकी सम्पूर्णता में देखा जा सकता है। इन्होंने मध्यवर्गीय जीवन को भोगा और उसे यथार्थ रूप में अपने कथा साहित्य के माध्यम से प्रकट किया।

सूर्यबाला का कथा साहित्य बहुत विस्तृत और व्यापक है। इनके कथा साहित्य की सबसे प्रमुख विषेषता यह है कि इनके कथा साहित्य में जहां एक ओर पारिवारिक जीवन एवं नारी समस्या आदि को उद्घाटित किया गया है, वहीं दूसरी ओर षिक्षा क्षेत्र की स्थिति पर भी प्रकाष डाला गया है। इनके कथा साहित्य में जीवन के प्रति गहन अन्तर्दृष्टि रही है। इन्होंने मध्यवर्गीय समाज में फैली विसंगतियों और विषमताओं को खुली आंख से देखा तथा अनुभव किया है। भारतीय समाज के मध्यवर्गीय जीवन का जितना यथार्थवादी चित्रण सूर्यबाला के कथा साहित्य में उद्घाटित किया है, उतना अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। सूर्यबाला का कथा साहित्य मध्यवर्गीय व्यक्ति के जीवन के सम्पूर्ण पहलुओं को गहराई से चित्रित करता है।

सम्बद्ध साहित्य का सर्वेक्षण

सूर्यबाला के कथा साहित्य पर विविध शोधपरक एवं आलोचनात्मक कार्य हुए हैं। इन सभी कार्यों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

उत्तर महाराष्ट्र विष्वविद्यालय जलगांव में वसन्तकुमार गणपत माली ने पीएच. डी. की उपाधि हेतु 'सूर्यबाला के कथा साहित्य में युगबोध' विषय पर शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया है। इस शोध प्रबन्ध में सूर्यबाला के कथा साहित्य की समग्र समीक्षा की गई है। साथ ही साठोत्तरी महिला रचनाकारों की कृतियों का भी लेखा–जोखा प्रस्तुत किया है।

उस्मानिया विष्वविद्यालय हैदराबाद में सीता मिश्र ने पीएच. डी. की उपाधि हेतु 'साठोत्तरी महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में पात्रों का परिवर्तित मूल्य–बोध' विषय पर शोध प्रबन्ध लिखा है। इस शोध प्रबन्ध में सूर्यबाला के उपन्यास 'मेरे सन्धि पत्र' में परिवर्तित होते पारिवारिक जीवन मूल्यों की चर्चा की गई है।

पूना विष्वविद्यालय में कृष्णा पोतदार ने पीएच. डी. की उपाधि हेतु 'अन्तिम दषक के महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में स्त्री–विमर्ष' विषय पर शोध प्रबन्ध लिखा है। इस शोध प्रबन्ध में सूर्यबाला के उपन्यास 'दीक्षान्त' में भारतीय विष्वविद्यालयों एवं उसके समस्त महाविद्यालयों में चलने वाले कारोबार का परिचय दिया है।

वैषाली देषपांडे ने अपनी पुस्तक 'स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार' में अनेक लेखिकाओं की रचनाओं का विवेचन किया है। इन्होंने सूर्यबाला के उपन्यासों 'मेरे सन्धिपत्र', 'अग्निपंखी' और 'सुबह के इन्तजार तक' में नारी मन की छटपटाहट और संघर्षों की चर्चा की है।

दीपा हावगीराज मैलारे ने अपनी पुस्तक 'साठोत्तरी हिन्दी कहानियों में पुरूष चरित्र' में सूर्यबाला की कहानियों 'तोहफा' 'योद्धा' तथा 'खोह' को विवेचित किया है। इसमें एक गैर जिम्मेदार संवेदनषून्य पिता के विविध क्रिया–कलापों एवं व्यवहारों को अभिव्यक्ति किया है।

सौ० मंगल कप्पीकेरे ने अपनी पुस्तक 'साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी' में सूर्यबाला की कहानियों की समीक्षा विविध शीर्षकों के अन्तर्गत की है। इसमें सूर्यबाला की कहानियों के नारी पात्रों की मनःस्थितियों को उद्‌घाटित किया है।

ओम प्रकाष शर्मा ने अपनी पुस्तक 'समकालीन महिला लेखन' में सूर्यबाला के जन्म और लेखन का परिचय एवं विवेचन दिया है।

मधु सन्धु ने अपनी पुस्तक 'साठोत्तरी महिला कहानीकार' में सूर्यबाला के साहित्यिक जीवन पर प्रकाष डाला है। उनका कहना है कि सूर्यबाला के साहित्यिक जीवन पर पिता की कवि प्रवृत्ति तथा बहनों के संगीत–साहित्य प्रेम का विषेष प्रभाव पड़ा है।

रमा नवले द्वारा लिखी गई पुस्तक 'मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी' में सूर्यबाला की कहानियों 'एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम', 'दिषाहीन', 'मुंडेर पर', 'थाली भर चांद' को विवेचित–विष्लेषित किया गया है।

माधुरी छेड़ा ने 'सूर्यबाला की कहानियां' नामक समीक्षा ग्रन्थ में लिखा है कि सूर्यबाला के पास उनका समृद्ध कथा षिल्प है। जिसके तहत हम कहानियों को पढ़ते और महसूसते ही नहीं बल्कि देखते भी हैं। उनकी कहानियां न तो नारीवाद का परचम लहराती है, न किसी विचारधारा अथवा विमर्ष के खूंटे से बांधती हैं। लेबलों की सीमाओं से बाहर उन्होंने संवेदना के क्षेत्र में आने वाले हर विषय को अपनी कहानियों का कथ्य बनाया है।

प्रकाष मनु ने 'बीसवीं शताब्दी के अन्त में उपन्यास, एक पाठक के नोट्स' नामक पुस्तक में सूर्यबाला के कई उपन्यासों 'अग्निपंखी' 'यामिनी कथा' तथा 'दीक्षान्त' का वर्णन किया है। इसमें गांव से शहर में नौकरी करने आए बेरोजगार युवक की रोजमर्रा के तनावों के बीच अकथनीय उमड़न–घुमड़न भरी कथा का वर्णन मिलता है।

मोनिका सन्तोष डावर ने 'कथा लेखिका सूर्यबाला' नामक कृति में हिन्दी कथा साहित्य की पृष्ठभूमि, सूर्यबाला का व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त विवेचन किया है। इन्होंने महिला कथा साहित्य लेखिकाओं का तुलनात्मक अध्ययन भी किया है।

श्यामसुन्दर घोष ने अपनी पुस्तक 'सूर्यबाला के लेख' में सूर्यबाला की कहानियों ' थाली भर चांद', 'न–किन्नी–न','रहमदिल' आदि का विवेचन किया है।

सविता चोखेबाकिर्ते ने अपनी पुस्तक 'आठवें दषक की लेखिकाओं के उपन्यासों में व्यक्त स्त्री चरित्र' में सूर्यबाला के उपन्यासों 'अग्निपंखी', 'दीक्षान्त' तथा 'यामिनाी कथा' में आधुनिकता बोध का संक्षिप्त में परिचय दिया है।

विषय परिसीमन

सूर्यबाला का कथा साहित्य अत्यन्त व्यापक एवं गम्भीर है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में समाज के सभी वर्गों के जीवन का यथार्थ रूप में चित्रण किया है। मैंने इनके कथा साहित्य के विस्तृत फलक को देखते हुए इनके कथा साहित्य में मध्यवर्ग को ही अपने शोध प्रबन्ध का विषय चुना है। इस शोध प्रबन्ध के अन्तर्गत सूर्यबाला के व्यक्तित्व, कृतित्व, मध्यवर्ग का सैद्धान्तिक पक्ष, सामाजिक, आर्थिक,

राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक पक्षोंको उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है।

प्रबन्ध योजना

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को अध्ययन की सुविधा हेतु आठ अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक अध्याय को विविध शीर्षकों एवं उपषीर्षकों में बांटा गया है। शोध प्रबन्ध के आरम्भ में भूमिका और अन्त में उपसंहार का समायोजन किया है।

पहला अध्यायः 'सूर्यबालाः व्यक्तित्व एवं कृतित्व' है। इस अध्याय को व्यक्तित्व, कृतित्व और हिन्दी महिला कथाकारों में सूर्यबाला का स्थान मुख्य शीर्षकों में रखा गया है। जन्म, षिक्षा–दीक्षा, पारिवारिक पृष्ठभूमि, वैवाहिक जीवन, व्यवसाय, पुरस्कार एवं यात्राएं, कहानी, उपन्यास और अन्य साहित्य आदि उपषीर्षक हैं।

दूसरा अध्यायः 'मध्यवर्गः सैद्धान्तिक विवेचन' है। वर्गः सामान्य परिचय, वर्गः विविध भेद, मध्यवर्गः सामान्य परिचय, मध्यवर्गः विविध भेद, मध्यवर्गः प्रवृत्तिगत विषेषताएं, मध्यवर्ग एवं हिन्दी कथा साहित्य इस अध्याय के मुख्य शीर्षक हैं। अर्थ एवं परिभाषा, स्वरूप, वर्ग और समाज, उच्चवर्ग, मध्यवर्ग, निम्नवर्ग, अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, उच्च मध्यवर्ग, मध्य मध्यवर्ग, निम्न मध्यवर्ग, षिक्षित, नौकरी पेषा, संघर्षषील, समाजप्रेरक, महत्वाकांक्षी, अवसरवादी, आत्मकेन्द्रित, असन्तुष्ट, समझौतावादी, सुविधा भोगी, भारतीय परिवेष और मध्यवर्ग, स्वतन्त्रता पूर्ववर्ती कथा साहित्य में मध्यवर्ग, स्वतन्त्रता परवर्ती कथा साहित्य में मध्यवर्ग आदि उपषीर्षक हैं।

तीसरा अध्यायः 'सूर्यबाला के कथा साहित्य में मध्यवर्ग : सामाजिक पक्ष' है। इस अध्याय में समाजः सामान्य परिचय, पारिवारिक सम्बन्धों का स्वरूप, तनाव एवं पारिवारिक विघटन, सामाजिक परिस्थितियां एवं समस्याएं, सामाजिक मनोदषा एवं नारी आदि मुख्य शीर्षक हैं। अर्थ, परिभाषा, मध्यवर्ग एवं समाज, दाम्पत्य सम्बन्ध, माता–पिता एवं सन्तान सम्बन्ध, सास–बहू सम्बन्ध, भाई–बहन सम्बन्ध, अन्य सम्बन्ध, परस्पर प्रतिस्पर्द्धा की भावना, पुरुष आकांक्षा, अस्मिता की तलाष और नारी उच्छश्रृंखलता, असफल विवाह, स्तर भिन्नता, बुजुर्गों के प्रति उपेक्षा भाव, परिवारों में बढ़ता असन्तोष, परम्परा और आधुनिकता का द्वन्द्व, असुरक्षा का वातावरण, नौकरी

पेषा नारी, पुरुष द्वारा उपेक्षित नारी, शोषण के विविध रूप एवं नारी, नारी के प्रति पारम्परिक सोच आदि उपषीर्षक हैं।

चौथा अध्यायः सूर्यबाला के कथा साहित्य में मध्यवर्गः आर्थिक पक्ष' है। इस अध्याय में अर्थः सामान्य परिचय, अर्थाभाव से उत्पन्न समस्याएं, आर्थिक शोषण, अर्थ एवं सम्बन्ध आदि मुख्य शीर्षक हैं। अर्थ, परिभाषा, मध्यवर्ग एवं अर्थ, बेरोजगार युवाओं की समस्याएं, विदेषों की ओर बढ़ता पलायन, गरीबी की समस्या, अर्थाभाव से बदलते सामाजिक सरोकार, मालिक एवं नौकर, अधिकारियों द्वारा शोषण, मजदूरी व्यवस्था एवं शोषण, अर्थ एवं नारी शोषण, आर्थिक विसंगतियां एवं व्यक्तिगत जीवन, अर्थ एवं पारिवारिक सम्बन्ध, अर्थ एवं सामाजिक सम्बन्ध, अर्थ एवं आत्मप्रतिष्ठा आदि उपषीर्षक हैं।

पांचवां अध्यायः 'सूर्यबाला के कथा साहित्य में मध्यवर्गः राजनीतिक पक्ष' है। इस अध्याय में राजनीतिः सामान्य परिचय, वर्तमान राजनीतिक स्तर एवं प्रभाव, राजनीति एवं शासन प्रणाली, राजनीति एवं जन संघर्ष आदि मुख्य शीर्षक हैं। अर्थ, परिभाषा, मध्यवर्ग एवं राजनीति, नेताओं का भ्रष्ट आचरण, राजनीतिक अवसरवादिता, राजनीतिक एवं युवा वर्ग, राजनीतिक दॉव पेंच, भ्रष्ट शासन प्रणाली, षिक्षा प्रणाली एवं राजनीतिक हस्तक्षेप, समाज विरोधी कार्य एवं स्वार्थपूर्ति, राजनीति और बाहुबल, राजनीतिक हस्तक्षेप एवं कर्मचारी वर्ग, अध्यापक छात्र संघर्ष, मजदूर शोषण एवं विरोध, श्रम एवं भ्रष्टन्याय प्रणाली आदि उपषीर्षक हैं।

छठा अध्यायः 'सूर्यबाला के कथा साहित्य में मध्यवर्गः धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष' है। इस अध्याय में धर्मः सामान्य परिचय, धार्मिक पक्ष के विविध रूप, संस्कृतिः सामान्य परिचय, सांस्कृतिक पक्ष के विविध रूप आदि मुख्य शीर्षक हैं। अर्थ, परिभाषा, मध्यवर्ग एवं धर्म, धार्मिक आस्था, पूजा पद्धति, धार्मिक अनुष्ठान, धर्म एवं स्वार्थपूर्ति, धार्मिक रूढ़िया एवं अन्धविष्वास, बाह्य आड़म्बर अर्थ, परिभाषा, मध्यवर्ग एवं संस्कृति, रहन–सहन, खान–पान, परिधान, मूल्य विघटन, भौतिकवादी प्रवृति, खोखली नैतिकता आदि उपषीर्षक हैं।

सातवां अध्यायः ' सूर्यबाला के कथा साहित्य में मध्यवर्गः मनोवैज्ञानिक पक्ष' है। इस अध्याय को मनोविज्ञानः सामान्य परिचय, मनोवृत्तियां, नारी मनोविज्ञान,

बाल मनोविज्ञान आदि मुख्य शीर्षक हैं। अर्थ, परिभाषा, मध्यवर्ग एवं मनोविज्ञान, काम भावना, आक्रोष, घुटन, हीनभावना, अकेलापन, विवषता, निराषा, मातृत्व की भावना, मानसिक द्वन्द्व, आत्म संघर्ष, आन्तरिक विद्रोह, जिज्ञासा, अहम्, घृणावृत्ति, स्वप्न, भय आदि उपषीर्षक हैं।

अन्त में उपसंहार प्रस्तुत किया है। इसमें शोध प्रबन्ध की उपलब्धि तथा सार आदि को विवेचित किया है। इसके पष्चात संदर्भ सूची में मूल ग्रन्थ, सहायक ग्रन्थ (हिन्दी एवं अंग्रेजी), शब्दकोष एवं विष्वकोष (हिन्दी एवं अंग्रेजी) तथा पत्र–पत्रिकाओं का विवरण दिया है।

सूर्यबाला के कथा साहित्य में मध्यवर्ग

पहला अध्याय

01 सूर्यबाला :व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 व्यक्तित्व

1.1.1 जन्म

1.1.2 षिक्षा–दीक्षा

1.1.3 पारिवारिक पृष्ठभूमि

1.1.4 वैवाहिक जीवन

1.1.5 व्यवसाय

1.1.6 पुरस्कार एवं यात्राएं

1.2कृतित्व

1.2.1 कहानी

1.2.2 उपन्यास

1.2.3 अन्य साहित्य

1.3 हिन्दी महिला कथाकारों में सूर्यबाला का स्थान

दूसरा अध्याय

02 मध्यवर्गः सैद्धान्तिक विवेचन

2.1 वर्गः सामान्य परिचय

2.1.1 अर्थ एवं परिभाषा

2.1.2 स्वरूप

2.1.3 वर्ग और समाज

2.2 वर्गः विविध भेद

2.2.1 उच्चवर्ग

2.2.2 मध्यवर्ग

2.2.3 निम्नवर्ग

2.3 मध्यवर्ग : सामान्य परिचय

2.3.1 अर्थ

2.3.2 परिभाषा

2.3.3 स्वरूप

2.4 मध्यवर्गः विविध भेद

2.4.1 उच्च मध्यवर्ग

2.4.2 मध्य मध्यवर्ग

2.4.3 निम्न मध्यवर्ग

2.5 मध्यवर्गः प्रवृत्तिगत विषेषताएं

2.5.1 षिक्षित

2.5.2 नौकरी पेषा

2.5.3 संघर्षषील

2.5.4 समाजप्रेरक

2.5.5 महत्वाकांक्षी

2.5.6 अवसरवादी

2.5.7 आत्मकेन्द्रित

2.5.8 असन्तुष्ट

2.5.9 समझौतावादी

2.5.10 सुविधा भोगी

2.6 मध्यवर्ग एवं हिन्दी कथा साहित्य

2.6.1 भारतीय परिवेष और मध्यवर्ग

2.6.2 स्वतन्त्रता पूर्ववर्ती कथा साहित्य में मध्यवर्ग

2.6.3 स्वतन्त्रता परवर्ती कथा साहित्य में मध्यवर्ग

तीसरा अध्याय

03 सूर्यबाला के कथा साहित्य में मध्यवर्गः सामाजिक पक्ष

3.1 समाजः सामान्य परिचय

3.1.1 अर्थ

3.1.2 परिभाषा

3.1.3 मध्यवर्ग एवं समाज

3.2 परिवारिक सम्बन्धों का स्वरूप

3.2.1 दाम्पत्य सम्बन्ध

3.2.2 माता–पिता एवं सन्तान सम्बन्ध

3.2.3 सास–बहू सम्बन्ध

3.2.4 भाई–बहन सम्बन्ध

3.2.5 अन्य सम्बन्ध

3.3 तनाव एवं पारिवारिक विघटन

3.3.1 परस्पर प्रतिस्पर्द्धा की भावना

3.3.2 पुरुष आकांक्षा

3.3.3 अस्मिता की तलाष और नारी उच्छशृंखलता

3.3.4 असफल विवाह

3.3.5 स्तर भिन्नता

3.4 सामाजिक परिस्थितियां एवं समस्याएं

3.4.1 बुजुर्गों के प्रति उपेक्षा भाव

3.4.2 परिवारों में बढ़ता असन्तोष

3.4.3 परम्परा और आधुनिकता का द्वन्द्व

3.4.4 असुरक्षा का वातावरण

3.5 सामाजिक मनोदषा एवं नारी

3.5.1 नौकरी पेषा नारी

3.5.2 पुरुष द्वारा उपेक्षित नारी

3.5.3 शोषण के विविध रूप एवं नारी

3.5.4 नारी के प्रति पारम्परिक सोच

चौथा अध्याय

04 सूर्यबाला के कथा साहित्य में मध्यवर्गः आर्थिक पक्ष

4.1 अर्थः सामान्य परिचय

4.1.1 अर्थ

4.1.2 परिभाषा

4.1.3 मध्यवर्ग एवं अर्थ

4.2 अर्थाभाव से उत्पन्न समस्याएं

4.2.1 बेरोजगार युवाओं की समस्याएं

4.2.2 विदेषों की ओर बढ़ता पलायन

4.2.3 ग़रीबी की समस्या

4.2.4 अर्थाभाव से बदलते सामाजिक सरोकार

4.3 आर्थिक शोषण

4.3.1 मालिक एवं नौकर

4.3.2 अधिकारियों द्वारा शोषण

4.3.3 मजदूरी व्यवस्था एवं शोषण

4.3.4 अर्थ एवं नारी शोषण

4.4 अर्थ एवं सम्बन्ध

4.4.1 आर्थिक विसंगतियां एवं व्यक्तिगत जीवन

4.4.2 अर्थ एवं पारिवारिक सम्बन्ध

4.4.3 अर्थ एवं सामाजिक सम्बन्ध

4.4.4 अर्थ एवं आत्म प्रतिष्ठा

पांचवां अध्याय

05 सूर्यबाला के कथा साहित्य में मध्यवर्गः राजनीतिक पक्ष

5.1राजनीतिः सामान्य परिचय

5.1.1 अर्थ

5.1.2 परिभाषा

5.1.3 मध्यवर्ग एवं राजनीति

5.2 वर्तमान राजनीतिक स्तर एवं प्रभाव

5.2.1 नेताओं का भ्रष्ट आचरण

5.2.2 राजनीतिक अवसरवादिता

5.2.3 राजनीति एवं युवा वर्ग

5.2.4 राजनीतिक दांव पेंच

5.3 राजनीति एवं शासन प्रणाली

5.3.1 भ्रष्ट शासन प्रणाली

5.3.2 षिक्षा प्रणाली एवं राजनीतिक हस्तक्षेप

5.3.3 समाज विरोधी कार्य एवं स्वार्थपूर्ति

5.3.4 राजनीति और बाहुबल

5.4 राजनीति एवं जनसंघर्ष

5.4.1 राजनीतिक हस्तक्षेप एवं कर्मचारी वर्ग

5.4.2 अध्यापक–छात्र संघर्ष

5.4.3 मजदूर शोषण एवं विरोध

5.4.4 श्रम एवं भ्रष्ट न्याय प्रणाली

छठा अध्याय

06 सूर्यबाला के कथा साहित्य में मध्यवर्गः धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष

6.1 धर्मः सामान्य परिचय

6.1.1 अर्थ

6.1.2 परिभाषा

6.1.3 मध्यवर्ग एवं धर्म

6.2 धार्मिक पक्ष के विविध रूप

6.2.1 धार्मिक आस्था

6.2.2 पूजा पद्धति

6.2.3 धार्मिक अनुष्ठान

6.2.4 धर्म एवं स्वार्थपूर्ति

6.2.5 धार्मिक रूढ़ियां एवं अन्धविष्वास

6.2.6 बाह्य आड़म्बर

6.3 संस्कृति : सामान्य परिचय

6.3.1 अर्थ

6.3.2 परिभाषा

6.3.3 मध्यवर्ग एवं संस्कृति

6.4 सांस्कृतिक पक्ष के विविध रूप

6.4.1 रहन–सहन

6.4.2 खान–पान

6.4.3 परिधान

6.4.4 मूल्य विघटन

6.4.5 भौतिकवादी प्रवृत्ति

6.4.6 खोखली नैतिकता

सांतवां अध्याय

07 सूर्यबाला के कथा साहित्य में मध्यवर्गः मनोवैज्ञानिक पक्ष

7.1 मनोविज्ञानः सामान्य परिचय

7.1.1 अर्थ

7.1.2 परिभाषा

7.1.3 मध्यवर्ग एवं मनोविज्ञान

7.2 मनोवृत्तियां

7.2.1 काम भावना

7.2.2 आक्रोष

7.2.3 घुटन

7.2.4 हीनभावना

7.2.5 अकेलापन

7.2.6 विवषता

7.2.7 निराषा

7.3 नारी मनोविज्ञान

7.3.1 मातृत्व की भावना

7.3.2 मानसिक द्वन्द्व

7.3.3 आत्म संघर्ष

7.3.4 आन्तरिक विद्रोह

7.4 बाल मनोविज्ञान

7.4.1 जिज्ञासा

7.4.2 अहम्

7.4.3 घृणावृत्ति

7.4.4 स्वप्न

7.5.5 भय

उपसंहार

1. मूल ग्रन्थ

2. सहायक ग्रन्थ हिन्दी

3. सहायक ग्रन्थ अंग्रेजी

4. शब्दकोष एवं विष्वकोष

    4.1 हिन्दी
    4.2 अंग्रेजी

5. पत्र–पत्रिकाएं

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

क्र० सं०	रचनाकार	रचना का नाम	प्रकाशन स्थल	संस्करण
मूल ग्रन्थ				
उपन्यास				
1.	सूर्यबाला	अग्निपंखी	ग्रन्थ अकादमी, नई दिल्ली	2011
2.	सूर्यबाला	दीक्षान्त	नेशनल पब्लिषिंग हाऊस, नई दिल्ली	1977
3.	सूर्यबाला	मेरे सन्धिपत्र	नेशनल पब्लिषिंग हाऊस, नई दिल्ली	1977
4.	सूर्यबाला	यामिनी कथा	ज्ञान गंगा, नई दिल्ली	1991
5.	सूर्यबाला	सुबह के इंतजार तक	ग्रन्थ अकादमी, नई दिल्ली	2011
कहानी				
1.	सूर्यबाला	इक्कीस कहानियां	ग्रन्थ प्रकाषन, नई दिल्ली	2004
2.	सूर्यबाला	एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम	विद्या विहार, नई दिल्ली	2008
3.	सूर्यबाला	कात्यायनी संवाद	ग्रन्थ अकादमी, नई दिल्ली	2010
4.	सूर्यबाला	गृह प्रवेष	ग्रन्थ अकादमी, नई दिल्ली	2011
5.	सूर्यबाला	थाली भर चाँद	सत्साहित्य प्रकाषन, दिल्ली	2011

6.	सूर्यबाला	दिशाहीन	प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली,	2010
7.	सूर्यबाला	पाँच लम्बी कहानियाँ	ग्रन्थ अकादमी, नई दिल्ली	2011
8.	सूर्यबाला	मानुष गन्ध	किताबघर, नई दिल्ली	2003
9.	सूर्यबाला	मुंडेर पर	ज्ञान गंगा, नई दिल्ली	1990
10.	सूर्यबाला	साँझवाती	किताबघर, नई दिल्ली	1995

व्यंग्य रचना

1.	सूर्यबाला	अजगर करे न चाकरी	विद्या विहार, नई दिल्ली	
2.	सूर्यबाला	झगड़ा निपटारक दफ्तर	विद्या विहार, नई दिल्ली	2012
3.	सूर्यबाला	देश सेवा के अखाड़े में	विद्या विहार, नई दिल्ली	
4.	सूर्यबाला	धृतराष्ट्र टाइम्स	विद्या विहार, नई दिल्ली	2003
5.	सूर्यबाला	भगवान ने कहा था	विद्या विहार, नई दिल्ली	

सहायक ग्रन्थ (हिन्दी)

1.	अमृतराय	आधुनिक भावबोध की संज्ञा	हंस प्रकाषन, इलाहाबाद	1972
2.	अमृत लाल नागर	साहित्य और संस्कृति	राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली	1986
3.	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	हिन्दी साहित्य का इतिहास	नागरी प्रचारिणी सभा, काषी	सं० 2025
4.	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी	विचार और विमर्ष	साहित्य भवन प्रा० लि०, इलाहाबाद	1969
5.	आत्माराम शाह	मनोविज्ञान : मानवीय समायोजन के मूल सिद्धान्त	राजकमल प्रकाषन, दिल्ली	1960

6.	आर० एन० सिंह	व्यष्टि अर्थषास्त्र	नमेश बुक डिपो, जयपुर	1970
7.	आर० सी० अग्रवाल	नागरिक शास्त्र के सिद्धान्त तथा भारतीय संविधान और प्रषासन	एस० चाँद एण्ड कम्पनी, दिल्ली	1971
8.	इन्दु वीरेन्द्रा	साठोत्तरी कहानी में परिवार	संजय प्रकाषन, दिल्ली	1996
9.	उमा शुक्ल	भारतीय नारी : अस्मिता की पहचान	लोकभारती प्रकाषन, इलाहाबाद	1994
10.	उर्मिला गुप्ता	हिन्दी कथा साहित्य के विकासमें महिलाओं का योगदान	राधाकृष्ण प्रकाषन, दिल्ली	1966
11.	ए० आर० देसाई	भारतीय राष्ट्रवादी की सामाजिक पृष्ठभूमि	दि मैकमिलन प्रकाषन, दिल्ली	1976
12.	एम० एल० गुप्ता	भारतीय सामाजिक समस्याएं	साहित्य भवन प्रकाषन, आगरा	1962
13.	एस० एल० नन्दा	भारतीय सरकार एवं राजनीति	माडेन पब्लिकेषन, रोहतक	1984
14.	कृष्णा पोतदार	अन्तिम दषक के महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में स्त्री–विमर्ष	विद्या प्रकाषन, कानपुर	2011
15.	गुरुदत्त	धर्म और समाज	शाष्वत संस्कृति परिषद् दिल्ली	1972
16.	गुलाबी देवी	शिवानी के कथा साहित्य में नारी चित्रण	हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय, षिमला (अप्रकाषित शोध प्रबन्ध)	2011

17.	गोवर्धन प्रसाद भटट्	मनोविज्ञान	लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाषन, आगरा	1960
18.	जयकरण	नेरश मेहता के कथा साहित्य में मध्यवर्ग	हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय षिमला (अप्रकाषित शोध प्रबन्ध)	2002
19.	जे० एस० मैकेन्जी	समाज दर्षन की रूपरेखा	रामकमल प्रकाषन, दिल्ली	1962
20.	दायक राम	धर्मवीर भारती के कथा साहित्य में मध्यवर्ग	हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय षिमला (अप्रकाषित शोध प्रबन्ध)	2009
21.	दीपा हावगीराज	साठोत्तरी हिन्दी कहानियों में पुरुष चरित्र	विकास प्रकाषन, लखनऊ	1966
22.	देवराज	भारतीय संस्कृति	हिन्दी समिति, लखनऊ	1966
23.	देवराज उपाध्याय	आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान	साहित्य भवन प्रकाषन, इलाहाबाद	1963
24.	देवेन्द्र इस्सर	साहित्य और आधुनिक युगबोध	कृष्ण ब्रदर्स, अजमेर	1973
25.	नन्ददुलारे वाजपेयी	आधुनिक साहित्य	भारतीय भण्डार लीडर प्रैस, इलाहाबाद	सं 2018
26.	नरेश कुमार	यषपाल के उपन्यासों में मध्यवर्ग	हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय षिमला (अप्रकाषित शोध प्रबन्ध)	2010
27.	प्रताप नारायण टंडन	हिन्दी उपन्यायों में वर्ग भावना	हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ	1977
28.	प्रशान्त वेदालंकार	धर्म का स्वरूप	गोविन्दराम हंसाराम नई सड़क, दिल्ली	1983

29.	प्रमिला कपूर	विविध परिदृष्य, विवाह, सेक्स और काम	राधाकृष्ण प्रकाषन, दिल्ली	1978
30.	पी० एम० थॉमस	भारतीय मध्यवर्ग और सामाजिक उपन्यास	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा	1995
31.	प्रीति प्रभा गोयल	भारतीय संस्कृति	पूजा प्रकाषन एवं खन्ना पब्लिषर्ज, दिल्ली	1967
32.	बच्चन सिंह	आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास	लोक भारतीय प्रकाषन, इलाहाबाद	1978
33.	बाबू गुलाबराय	भारतीय संस्कृति	रवीन्द्र प्रकाषन, ग्वालियर	1969
34.	मंजुला राणा	दसवें दषक के हिन्दी उपन्यासों में साम्प्रदायिक सौहार्द	वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली	2008
35.	मंजुलता गुप्ता	हिन्दी उपन्यास समाज और व्यक्ति का द्वन्द्व	सूर्य प्रकाषन, दिल्ली	1968
36.	मंजुलता सिंह	हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग	आर्य बुक डिपो, दिल्ली	1971
37.	महादेव प्रसाद	राजनीति के सिद्धान्त	किताब महल प्रकाषन, इलाहाबाद	1970
38.	मूलचन्द्र गौतम	हिन्दी नाटकों की भूमिका मध्यवर्ग के सन्दर्भ में	जागृति प्रकाषन, अलीगढ़	1982
39.	मोनिका सन्तोष डावर	कथा लेखिका सूर्यबाला	निर्मल पब्लिकेषन्स, दिल्ली	2008
40.	रमा नवले	मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी	वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली	2007
41.	रमेश तिवारी	हिन्दी उपन्यायों का सांस्कृतिक अध्ययन	रचना प्रकाषन, इलाहाबाद	1972

42.	राजदेव दुबे	स्मृति कालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति	प्रतिभा प्रकाषन, दिल्ली	1988
43.	राधाकृष्ण	धर्म और समाज	राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली	1960
44.	रामकुमार राय	असमान्य मनोविज्ञान	चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी	सं० 2017
45.	रामचन्द्र अग्रवाल	राजनीति शास्त्र के सिद्धान्त	एस० चन्द एण्ड कम्पनी, दिल्ली	1971
46.	राम बिहारी सिंह तोमर	हिन्दू विवाह एवम् परिवार की समस्याएं	हिन्दी समिति, लखनऊ	1954
47.	राहुल सांकृत्यायन	मानव समाज	बिहारी हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना	1974
48.	वसन्त कुमार गणपत माली	सूर्यबाला के कथा साहित्य में युगबोध	विकास प्रकाषन, कानपुर	2013
49.	वीणा गौतम	आधुनिक हिन्दी नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना	संजय प्रकाषन, दिल्ली	1984
50.	वीरकेश्वर प्रसाद सिंह	राजनीति शास्त्र के सिद्धान्त	ज्ञानदा प्रकाषन, पटना	1967
51.	वीरेन्द्र कुमार जैन	प्रेम का स्वरूप और अभिव्यक्ति	साहित्य संसार प्रकाषन, दिल्ली	1978
52.	वीरेन्द्र कुमार वसु	आधुनिक हिन्दी महाकाव्यों में काम तत्त्व	सरस्वती प्रकाषन, कानपुर	1986
53.	वैषाली देषपांडे	स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार	विकास प्रकाषन, कानपुर	2007

54.	श्यामचरण दुबे	मानव और संस्कृति	राजकमल प्रकाषन, दिल्ली	1969
55.	श्यामलाल वर्मा	आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त	मेकमिलन कम्पनी, नई दिल्ली	1976
56.	श्यामसुन्दर घोष	भारतीय मध्यवर्ग	बिहार ग्रन्थ अकादमी, पटना	1972
57.	शम्भूनाथ त्रिपाठी	भारतीय सामाजिक संरचना तथा संस्कृति	किताब महल प्रैस, इलाहाबाद	1961
58.	शिवस्वरूप सहाय	हिन्दू समाज संस्थाएं	किताब महल प्रैस, इलाहाबाद	1961
59.	शील प्रभा वर्मा	महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ	विद्या विहार प्रकाषन, कानपुर	1987
60.	श्रीराम शर्मा	आधुनिक हिन्दी उपन्यासः दार्षनिक चेतना	राजेश प्रकाषन, दिल्ली	2000
61.	सम्पूर्णानन्द	समाजवाद	भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी	1960
62.	संजय कुमार	अमरकान्त के कथा साहित्य में मध्यवर्ग	नमन प्रकाषन, नई दिल्ली,	2012
63.	संजय कुमार	कथा साहित्य और मध्यवर्ग	नमन प्रकाषन, नई दिल्ली	2012
64.	सावित्री शोभा	समाज और संस्कृति	नेशनल पब्लिषिंग हाऊस, नई दिल्ली	1970
65.	सीताराम जायसवाल	समायोजन मनोविज्ञान	उत्तर प्रदेष हिन्दी ग्रन्थ आकादमी, लखनऊ	1974
66.	सीमाराम शर्मा	स्वातन्त्र्योतर कथा साहित्य	वाणी प्रकाषन, दिल्ली	1965

67.	सुरेश सिन्हा	हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास	अशोक प्रकाषन, दिल्ली	1972
68.	सुषमा रानी चौहान	उपेन्द्रनाथ अष्क के कथा साहित्य में मध्यवर्ग	हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय, षिमला (अप्रकाषित शोध प्रबन्ध)	1999
69.	हरिशंकर दुबे	महिला उपन्यासकारों की नारी : प्रगति एवं पीड़ा के आयाम	अमन प्रकाषन, कानपुर	2012
70.	हेमराज निर्मम	हिन्दी उपन्यायों में मध्यवर्ग	विभू प्रकाषन, साहिबाबाद	1978

सहायक ग्रन्थ अंग्रेजी

1.	अमिताभ मुखर्जी	वुमन इन इंडिया लाइफ एण्ड सोसाइटी	इस्टिट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, कोलकता	1996
2.	आर० एम0 मेकाईवर	सोसाइटी एन इन्ट्रोडक्ट्री एनलिसस	दा मैकमिलन कम्पनी लि० लन्दन	1967
3.	ईस्टन	द फ्रेम वर्क फॉर पॉलिटीकल एनलिसस	एन्जलवुड क्लिफ्स एन० जे० प्रेन्टिस	1965
4.	एफॉनसेव	मार्क्सिसिस्ट साइकालॉजी	फोरन लैंगवेज पब्लिषिंग हाऊस, मास्को	

5.	एम० एल० श्रीनिवास	सोशल चेंज इन मॉडर्न इण्डिया	ओरियण्ट लोगमैन प्रा० लि० न्यू दिल्ली	1977
6.	गार्डनर मरफी	पर्सनैलिटी	हारपर एण्ड बद्रर्स, न्यूयॉर्क	1965
7.	गिन्सबर्ग	सोसोलॉजी	मिनरवा हिल्स, न्यूयॉर्क	1965
8.	चार्ल्स ई० स्किनर	एजुकेषनल साईकोलॉजी	द मैकमिलन कम्पनी लि० न्यूयॉर्क	1948
9.	जी० डबल्यू आलपोर्ट	पर्सनैलिटी ए० साइकालॉजीकल	हाल्ड प्रेस, न्यूयॉक	1961
10.	डेविस किंगस्ले	ह्यूमन सोसायटी	द मैकमिलन कम्पनी न्यूयॉर्क	1943
11.	पाल जैनेट	पॉलिटिकल साईंस एण्ड गवर्नमेंट	न्यू हाल्ड एन्स विस्टन पब्लिकेषन, लन्दन	
12.	प्रोमिला कपूर	मैरिज एण्ड द वरकिंग वुमन इन इण्डिया	विकास पब्लिषिंग, प्रा० लि० न्यू दिल्ली,	1995
13.	बी० बी० मिश्रा	द इण्डिन मिडिल क्लास	युनिवर्सिटी प्रैस, अमन हाऊस, लन्दन	
14.	रमेश चौहान	हिमाचल प्रदेष	मिनर्वा बुक हाऊस, षिमला	1998
15.	हेनरी मैष	सोशल स्ट्डीज	आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रैस, लन्दन	1977

शब्दकोष एवं विष्वकोष

1.	कालिका प्रसाद	बृहत् हिन्दी कोष	ज्ञानमण्डल (प्रा० लि०) वाराणसी	1965
2.	गोविन्द चातक	आधुनिक हिन्दी शब्दकोष	तक्षषिला प्रकाषन, दिल्ली	1983
3.	धीरेन्द्र वर्मा	हिन्दी साहित्य कोष	ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी	1963
4.	नगेन्द्र नाथ वसु	विश्व हिन्दी कोष	बी० आर० पब्लिषिंग कारपोरेशन, दिल्ली	1991
5.	फादर कामिल बुल्के	अंग्रेजी हिन्दी कोष	एस० चन्द्र एण्ड कम्पनी, दिल्ली	1968
6.	भोलानाथ तिवारी	हिन्दी पर्यायवाची कोष	किताब महल, इलाहाबाद	1962
7.	रामचन्द्र वर्मा	मानक हिन्दी कोष	हिन्दी सम्मेलन प्रयाग, इलाहाबाद	1966
8.	हरदेव बाहरी	बृहत् अंग्रेजी–हिन्दी कोष	ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी	सं० 1969

शब्दकोष एवं विष्वकोष (अंग्रेजी)

1.	सत्य प्रकाष, बलभद्र सिंह (सं०)	स्टैंडंर्ड इंग्लिष–हिन्दी डिक्षनरी	साहित्य सम्मेलन प्रयाग, इलाहाबाद	1983
2.	सुरेश कुमार, रामनाथ सहाय (सं०)	ऑक्सफोर्ड इंग्लिष–हिन्दी	ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, दिल्ली	2008
3.	हरदेव बाहरी(सं०)	डिक्षनरी कम्प्रीहैंसिव इंग्लिष–हिन्दी डिक्षनरी	ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी	1969

पत्र–पत्रिकाएं

आजकल	प्रकाशन विभाग पटियाला हाऊस, नई दिल्ली–1
आलोचना	राजकमल प्रकाषन, दिल्ली
कल्पना	कल्पना कार्यालय 516, सुल्तान बाजार हैदराबाद
दस्तावेज	बेतियाहाता गोरखपुर, उत्तर प्रदेष
दिनमान	टाईम्स ऑफ इण्डिया प्रकाषन, बम्बई
धर्मयुग	टाईम्स ऑफ इण्डिया प्रकाषन, बम्बई
नया प्रतीक	नेशनल पब्लिषिंग हाऊस, दिल्ली
भाषा	केन्द्रीय हिन्दी निदेषालय उच्चतर षिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

मुधमती	राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
विपाशा	भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेष
सरस्वती	सरस्वती प्रकाषन, इलाहाबाद
सारिका	टाईम्स ऑफ इण्डिया प्रकाषन, बम्बई
साप्ताहिक हिन्दुस्तान	हिन्दुस्तान टाईम्स प्रकाषन, नई दिल्ली

दैनिक प़त्र

अमर उजाला	चण्डीगढ़
गिरिराज	लोक सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेष षिमला–171005
दिव्य हिमाचल	दिव्य हिमाचल प्रकाषन, प्राईवेट लिमिटेड़ सम्पर्क प्रिटंर्स पुराना मटौर–176001 (हि.प्र.)
दैनिक ट्रिब्यून	ट्रिब्यून प्रैस चण्डीगढ़
दैनिक भास्कर	मलिकपुर सरहिन्द, जिला फतेहगढ़ साहिब, पंजाब
पंजाब केसरी	पंजाब केसरी प्रैस, जालन्धर